सरकारी एवं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का अध्ययन

*राजेश कुमार सिंह**
*राजेन्द्र कुमार जायसवाल***

अध्यापन के कार्यक्षेत्र में कार्य संतोष अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है, जिसके फलस्वरूप अध्यापक अपना कार्य संपादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतोष केवल वैयक्तिक स्तर तक सीमित होता है इसकी व्याख्या हम सामूहिक रूप में नहीं कर सकते हैं। क्योंकि कार्य संतोष किसी अध्यापक में अंतर्निहित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। जिसे एक अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय के जीवनकाल में बनाए रखने का प्रयास करता है।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है यह मत आदि काल से ही शिक्षाविदों का रहा है और यह निर्विवाद सत्य भी है। यही कारण है कि समाज ने आरम्भिक काल से ही बालकों के सर्वांगीण विकास की रुपरेखा सुनिश्चित करके उसे कार्य रूप में परिणित करने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व अध्यापकों को सौंप दिया। यही कारण है कि अध्यापन के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य से जोड़कर इसे विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि अध्यापक ही भावी नागरिकों के चरित्र का निर्माता, मानवीय मूल्यों का निर्धारक और अनुशासन का स्तंभ होता है। एक प्रकार से एक योग्य अध्यापक अप्रत्यक्ष रूप से राष्ट्र एवं समाज का प्रमुख निर्माता होता है। डॉ. सयद्दीन ने एक अध्यापक की महत्ता को बताते हुए कहा है कि–

> *''यदि आप किसी देश की जनता के सांस्कृतिक स्तर को मापना चाहते हैं तो इसका अच्छा तरीका यह है कि आप मालूम करें कि उस समाज में अध्यापकों की सामाजिक स्थिति क्या है तथा उन्हें कितनी प्रतिष्ठा प्राप्त है।''*

21वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में अमूल्य परिवर्तन दिन प्रतिदिन तीव्रगति से हो रहा है।

*वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, दी.द.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, (उ.प्र.)
**प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग, किसान महाविद्यालय, पैकोली (हाटा) कुशीनगर, (उ.प्र.)

जिससे अध्यापकों की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ, उनका स्वयं का व्यक्तित्व और अध्यापन कार्य संतोष तीनों ही प्रभावित हो रहे हैं। अध्यापन के कार्यक्षेत्र में कार्य संतोष अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है, जिसके फलस्वरूप अध्यापक अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतोष केवल वैयक्तिक स्तर तक सीमित होता है इसकी व्याख्या हम सामूहिक रूप में नहीं कर सकते हैं। क्योंकि कार्य संतोष किसी अध्यापक में अंतर्निहित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है जिसे एक अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय के जीवन काल में बनाए रखने का प्रयास करता है।

शोध समस्या का कथन

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु सरकारी तथा निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि में क्या कोई अंतर है, अथवा नहीं? इन दोनों प्रकार के विद्यालयों में अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए शोध-कार्य हेतु निम्न प्रकरण का चयन किया गया है-

सरकारी एवं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का अध्ययन

शोध कार्य का औचित्य

वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में सरकारी तथा निजी दोनों तरह की संस्थाओं द्वारा इस कार्य को संपादित किया जा रहा है। इनमें सरकारी स्तर पर परिषदीय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय, राज्य सरकार द्वारा अनुदानित प्राथमिक विद्यालय सम्मिलित हैं। विद्यालयों की विभिन्नता और शिक्षकों के वेतनमान में, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की भिन्नताएँ इन अध्यापकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करती हैं।

अतः प्रस्तुत शोधकार्य इन संस्थाओं के अध्यापकों के कार्य-संतुष्टि में क्या कोई सार्थक अंतर है? का अध्ययन किया गया है।

उद्देश्य

इस शोध कार्य को सम्पन्न करने के लिए शोध उद्देश्य का निर्धारण किया गया है जो निम्नांकित हैं -

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों एवं निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला अध्यापिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

- सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
- निजी प्राथमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

तुलनात्मक अध्ययन हेतु निम्नांकित निराकरणीय परिकल्पनाओं की संरचना की गयी है –

- सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापक एवं निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
- निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध कार्य की परिसीमाएँ

प्रस्तुत शोधकार्य का अध्ययन क्षेत्र विस्तृत होने के कारण केवल गोरखपुर मण्डल के दो जिले-गोरखपुर व महराजगंज के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र से 200 अध्यापकों को चयनित किया गया।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोधकार्य विवरणात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रकार का अनुसंधान है। इस प्रकार के अनुसंधान में घटित हो चुकी घटनाओं अथवा चल रही परंपराओं, अभिवृत्तियों, मानकों आदि का सर्वेक्षण के आधार पर वर्तमान वस्तुस्थिति का अध्ययन तथा भविष्य की प्रत्याशाओं का आकलन किया जाता है।

जनसंख्या तथा प्रतिदर्श

शोधकार्य के अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में गोरखपुर तथा महराजगंज के सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के समस्त अध्यापक इस शोध अध्ययन की जनसंख्या हैं।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के रूप में शिक्षकों का चयन हेतु सर्वप्रथम जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय, महाराजगंज तथा गोरखपुर से सरकारी व निजी प्राथमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की गयी।

तत्पश्चात् इन जनपदों से विद्यालयों का चयन लाटरी विधि द्वारा किया गया। प्रतिदर्श के लिए चयनित सभी (सरकारी तथा निजी) प्राथमिक विद्यालय में सेवारत अध्यापकों में से 200 अध्यापकों (100 सरकारी प्राथमिक विद्यालय के तथा 100 निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों) का चयन आकस्मिक विधि से किया गया है और परीक्षण के दिन विद्यालय में उपलब्ध अध्यापकों से ''अध्यापक कृत्य-संतोष मापनी'' पूरित करायी गयी।

मापन के उपकरण का प्रशासन एवं आंकड़ों का संकलन

अध्यापक कार्य-संतोष मापनी का प्रशासन विद्यालय के प्राचार्य की अनुमति से विद्यालय में उपस्थिति अध्यापकों से पूरित कराया गया। पूरित मापनी जो 5 बिंदुओं पर प्रतिक्रियाओं हेतु निर्मित थी उसका अंकन-पूर्णत सहमत पर 5 अंक, सहमत पर 4 अंक, अनिश्चित पर 3 अंक, असहमत पर 2 अंक तथा पूर्णत: असहमत पर 1 अंक आवंटित करके अंकन कार्य किया गया और इस आधार पर प्रत्येक अध्यापक कृत्य-सन्तोष मापनी पर प्राप्तांक संकलित किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकी विधियाँ

इस शोध कार्य के अंतर्गत प्राप्त आँकड़ों का सरकारी एवं निजी प्राथमिक संस्थाओं के महिला व पुरुष अध्यापकों के आधार पर मध्यमान तथा प्रमाणित विचलन की गणना की गई। विभिन्न समूहों के मध्य तुलना हेतु क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सरकारी तथा निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-सन्तोष का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु 'अध्यापक कृत्य-संतोष मापनी' द्वारा प्राप्त विभिन्न वर्ग के प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के अंकों का

तालिका 1

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	100	330.5	23.80	3.91	है	है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	100	317.9	21.8			

तालिका 2

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	40	323.5	14.00	2.88	है	है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	40	311.5	18.3			

मध्यमान, प्रमाणिक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात ज्ञात किया गया है।

तालिका 1 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का मध्यमान क्रमशः 330.5 तथा 317.9 प्राप्त हुआ। जबकि प्रामाणिक विचलन का मान क्रमशः 23.80 व 2.18 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के मध्य तुलना करने पर क्रांतिक अनुपात का मान 3.91 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शोध कार्य के पूर्व बनायी गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और यह कहा जा सकता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतोष के मध्य सार्थक अंतर है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का मध्यमान निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के मध्यमानों से अधिक है अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में अपने व्यवसाय के प्रति संतोष निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की तुलना में बेहतर है।

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का मध्यमान के आधार पर तुलना करने हेतु ज्ञात किए गए क्रांतिक-अनुपात का मान 2.88 हुआ है जो कि सार्थकता स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शोधकार्य के पूर्व बनाई गयी शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और यह कहा जा सकता है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों के मध्य सार्थक अंतर है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों का मध्यमान निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों के मध्यमान से अधिक है अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों का अपने व्यवसाय के प्रति कार्य संतोष निजी

तालिका 3

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों एवं निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	40	323.5	14.00	0.27	नहीं है	नहीं है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	40	322.5	22.9			

प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों से बेहतर है।

उपरोक्त तालिका 3 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों का मध्यमान 323.5 और प्रामाणिक विचलन का मान 14.00 है जबकि निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान 322.5 तथा प्रामाणिक विचलन का मान 22.9 है। दोनों समूहों के मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.27 ज्ञात हुआ जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है।

अत: शोधकार्य हेतु पूर्व संरचित शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है, अर्थात् उपरोक्त समूहों की कार्य-संतोष लगभग एक समान है।

तालिका 4

सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	40	323.5	14.00	3.01	है	है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	40	334.5	23.30			

तालिका 4 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान का मान क्रमशः 323.5 व 334.75 ज्ञात हुआ। जबकि प्रामाणिक विचलन का मान क्रमशः 14.00 व 23.30 ज्ञात किया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 3.01 ज्ञात हुआ है जोकि सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शोध कार्य हेतु पूर्व संरचित शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान पुरुष अध्यापकों की तुलना में अच्छा है, अर्थात् सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं का अपने व्यवसाय के प्रति संतोष सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की तुलना में बेहतर है।

तालिका 5 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों कीं महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान का मान क्रमशः 334.75 व 332.5 ज्ञात हुआ। जबकि प्रामाणिक विचलन का मान क्रमशः 23.30 व 22.9 है। दोनों समूहों के मध्यमानों की तुलना करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.90 प्राप्त हुआ जोकि सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शोधकार्य हेतु पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के कार्य-संतोष में सार्थक अंतर है, अर्थात सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की तुलना में बेहतर है।

तालिका 5

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	60	334.75	23.30	2.90	है	है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	60	322.5	22.9			

तालिका 6

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	60	334.75	23.30	5.57	है	है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	40	311.5	18.3			

तालिका 6 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों एवं महिला अध्यापिकाओं का मध्यमान का मान 334.75 है, जबकि निजी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों के मध्यमान का मान 311.5 है तथा दोनों समूहों के प्रामाणिक विचलन का मान क्रमशः 23.30 व 18.3 प्राप्त हुआ। मध्यमानों के आधार पर दोनों समूहों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 5.57 ज्ञात हुआ है जोकि सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शोध कार्य हेतु पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और कहा जा सकता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि में सार्थक अंतर है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकओं का मध्यमान निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों के मध्यमानों से अधिक है। इसका कारण सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं का निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अधिक वेतनमान, शैक्षिक सुविधाएँ व रोजगार की गारंटी है।

तालिका 7 के अवलोकन से यह स्पष्ट है कि निजी प्राथमिक विद्यालय के महिला एवं पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि मापनी पर दिए गए उत्तरों के प्राप्तांकों के आधार पर मध्यमान, प्रामाणिक विचलन व क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी। गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.66 प्राप्त हुआ जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है।

अतः शोधकार्य हेतु पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है और कहा जा सकता है कि निजी प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि में सार्थक अंतर है इस अंतर का प्रमुख कारण महिला अध्यापिकाओं की पारिवारिक परिस्थितयों का बेहतर होना जो कि उनकी कार्य-संतुष्टि को प्रभावित करती है।

तालिका 7

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों की कार्य-संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

क. सं	*समूह*	*संख्या*	*मध्यमान*	*प्रामाणिक विचलन*	*क्रान्तिक अनुपात*	*सार्थकता का स्तर*	
						0.5	0.1
1.	सरकारी प्राथमिक विद्यालय	60	332.5	22.9	2.66	है	है
2.	निजी प्राथमिक विद्यालय	40	311.5	18.3			

शोध परिणाम तथा निष्कर्ष

इस शोध कार्य में वैज्ञानिक विधि का प्रयोग करके निष्कर्ष को प्राप्त किया गया है। अध्ययन के परिणामस्वरूप कई उपयोगी परिणाम तथा निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं इन परिणामों तथा निष्कर्ष को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है–

(क) कार्य–संतुष्टि के संदर्भ में सरकारी तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की तुलना प्रो. एस.सी. गुप्ता की 'अध्यापक कृत्य–संतोष मापनी' पर प्राप्त अंकों के मध्यमानों के आधार पर की गयी है। तुलना हेतु क्रान्तिक अनुपात का मान 3.91 प्राप्त हुआ जोकि सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का मध्यमान निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अधिक है। अत: निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का स्तर उच्च है।

(ख) सरकारी तथा निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्रान्तिक अनुपात का मान 2.88 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का कार्य–संतुष्टि मापनी पर मध्यमान अंक निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की तुलना में अधिक है इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की तुलना में उच्च है।

(ग) सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों तथा निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य–संतुष्टि मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 0.27

प्राप्त हुआ जो सार्थकता के स्तर 0.05 स्तर पर भी सार्थक नहीं है।

यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों तथा निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि मापनी पर मध्यमानों के अंकों के आधार पर कार्य-संतुष्टि पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

(घ) सरकारी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रान्तिक अनुपात का मान 3.01 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर सार्थक है।

यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि मापनी का मध्यमान का अंक पुरुष अध्यापकों की तुलना में अधिक है इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि महिला अध्यापिकाओं की तुलना में भिन्न है।

(ङ) सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्रान्तिक अनुपात का मान 2.90 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के स्तर 0. 01 स्तर पर सार्थक है।

यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि मापनी का मध्यमान का अंक पुरुष अध्यापकों की तुलना में अधिक है इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि पुरुष अध्यापकों की तुलना में उच्च है।

(च) सरकारी तथा निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि का मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन हेतु क्रान्तिक अनुपात का मान 5.57 प्राप्त हुआ है जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहाँ पर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापकों का कार्य-संतुष्टि मापनी पर मध्यमान अंक निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की तुलना में अधिक है इससे यह स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष अध्यापकों की तुलना में उच्च है।

(छ) निजी प्राथमिक विद्यालय की महिला एवं पुरुष अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि मापनी पर मध्यमान के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करने पर क्रांतिक अनुपात का मान 2.66 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है। यहाँ पर निजी प्राथमिक विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं की कार्य-संतुष्टि मापनी पर मध्यमान का अंक पुरुष अध्यापकों की तुलना में अधिक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि निजी

प्राथमिक विद्यालय की महिला अध्यापिकओं की कार्य-संतुष्टि पुरुष अध्यापकों की तुलना में उच्च है।

शोध कार्य का शैक्षिक महत्व

प्रस्तुत शोध कार्य सरकारी तथा निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य-संतुष्टि पर आधारित है। इस शोध कार्य के परिणाम इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से अधिकांश परिस्थितियों में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के चाहे पुरुष अध्यापक हों या महिला अध्यापिकाओं उनकी कार्य संतुष्टि निजी प्राथमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला अध्यापिकाओं की तुलना में बेहतर है। इसका मुख्य कारण यह प्रतीत होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों का वेतनमान निजी प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में बेहतर होना, साथ ही सेवाकाल की पूर्ण निश्चितता उनके कार्य संतुष्टि के स्तर को बेहतर बनाती है जबकि निजी प्राथमिक विद्यालयों में भविष्य के प्रति असुरक्षा, वेतनमान में विसंगतियाँ तथा सेवाकाल की अनिश्चतता उनके कार्य-संतुष्टि को कम कर देती है। निजी प्राथमिक विद्यालयों में भी यदि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों की भाँति सेवाकाल का स्थायीकरण, भविष्यनिधि की सुविधा तथा वेतनमान की सामानता प्रदान की जाए तो इनके भी कार्य संतोष का स्तर बेहतर हो सकता है जिसके परिणामस्वरूप वे शिक्षण कार्य में पूरी एकाग्रता तथा लगन एवं निष्ठा के साथ शिक्षण कार्य सम्पादित करेंगे।

संदर्भ

1. बुच, एम.बी. 1997. *सैकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन,* बरोड़ा सोसायटी फॉर एजुकेशन रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट
2. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधन और प्रशिक्षण परिषद 1991. *थर्ड एण्ड फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन,* नई दिल्ली
2. बेस्ट जॉन, डब्ल्यू. 1982. *रिसर्च इन एजुकेशन, नई दिल्ली,* प्रेंटिस हॉल ऑफ इंडिया प्रा. लिमि.
3. गुप्ता, एस.पी.: *जॉब सेटिस्फेक्शन एण्ड द टीचर, शारदा पार्क भवन II,* यूनिवर्सिटी रोड, इलाहाबाद
4. शर्मा, ए. के. 1997. फिफ्थ *सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेज़न,* नई दिल्ली, नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग
5. कपिल, एच. के. 1986. *सांख्यिकी के मूल तत्व,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
6. गुप्ता, एस.पी. 1996. *भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ,* शारदा पुस्तक मंदिर, इलाहाबाद
7. गैरिट, ई. हेनरी 1989. *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग,* कल्याणी पब्लिशर्स-बी-15, 16 सेक्टर 8 नोएडा, उ.प्र.